14

बूढ़ी पृथ्वी का दुख

(कविता)

बोलना/सुनना	पढ़ना-लिखना	व्याकरण-बिंदु	जीवन-कौशल/क्रियाकलाप
• आत्मीयतापूर्ण उद्‌बोधन • प्रश्न-शैली में सुझाव • संवेदनशीलता का प्रचार	• प्रश्न-शैली की कविता • विनम्रता और आग्रह की भाषा • नामधातु क्रियाएँ	• मानवीकरण अलंकार	• पर्यावरण-संरक्षण में भूमिका का निर्धारण

मूल भाव

'बूढ़ी पृथ्वी का दुख' प्रश्न-शैली में लिखी गयी पाठक को संबोधित कविता है। कविता की अंतिम दो पंक्तियों को छोड़ दें, तो यह शैली पूरी कविता में मिलती है। कवयित्री वस्तुत: प्रश्न नहीं करती; प्रश्नों के बहाने पेड़ों, नदियों, पानी, पहाड़, हवा और इन सबको जगह देने वाली पृथ्वी के भय, दुख और यातना को सुनने, देखने, सोचने, महसूस करने और उनका दुख बाँटने का सुझाव रखती है। कवयित्री ने इन सबको संकट में उसी प्रकार व्यवहार करते दिखाया है, जैसे मनुष्य करता है; इसलिए इस कविता में प्रकृति का मानवीकरण किया गया है। मानवीकरण के कारण यह कविता पाठक को प्रकृति के प्रति संवेदनशील बनाती है। कविता की अंतिम दो पंक्तियों में मनुष्य होने की वास्तविकता को भी व्यक्त किया गया है। कवयित्री के अनुसार हम सब मनुष्य तभी कहलाएँगे, जब पृथ्वी और उसे सौंदर्य प्रदान करने वाले, साथ ही हमें जीवन देने वाले–पेड़ों, नदियों, पहाड़ों, हवा के दुख को समझकर इनकी रक्षा करेंगे। इस प्रकार यह कविता पर्यावरण का संरक्षण करने के लिए प्रेरित करने वाली कविता है।

मुख्य बिंदु

- कविता में घटते वृक्ष, घटती हरियाली और मानव-जीवन पर इसके विनाशकारी प्रभाव के प्रति चिंता व्यक्त की गई है।
- उपभोक्तावादी प्रवृत्ति के कारण आजकल लोग ज़्यादा-से-ज़्यादा चीज़ों को भोग लेने के लिए तत्पर हैं, इस स्वार्थी मनोवृत्ति का प्रभाव पेड़ों पर पड़ रहा है।
- पेड़ों का संकट पूरी मनुष्य जाति का संकट है, इसलिए हमें इसे अनुभव करना चाहिए और इसे दूर करने के उपाय भी करने चाहिए।
- नदियाँ धरती की जीवन-रेखा हैं। तरह-तरह के प्रदूषण और कूड़े-गंदगी के कारण वे गंदे नाले में परिवर्तित हो रही हैं।
- किसी भी चीज़ का उपयोग करते समय यह ध्यान में रखना ज़रूरी है कि उस चीज़ पर दूसरों का भी हक है।
- यह हमारा कर्त्तव्य है कि नदियों को साफ़ रखें, सूखने से बचाएँ। जल के अन्य स्रोतों को बढ़ावा

दें। जब भी जल का उपयोग करें, ऐसे लोगों की चिंता भी करें, जिन्हें आज भी पानी सुलभ नहीं है।

- पहाड़ धरती की रक्षा के लिए अनिवार्य हैं, इसलिए इन्हें 'भूधर' कहा जाता है। आज ऊँची-ऊँची इमारतों के निर्माण के लिए पहाड़ों को नष्ट किया जा रहा है, इससे आने वाले दिनों में धरती पर संकट बढ़ सकता है। हमें इस संकट को समझकर इसे दूर करने के प्रयास करने चाहिए।
- कवयित्री ने हवा को घर के पिछवाड़े ख़ून की उल्टियाँ करते दिखाया है। इसका आशय यह है कि हवा के निरंतर प्रदूषित होते जाने के कारण भयंकर रोग बढ़ रहे हैं। कविता में हवा को प्रदूषण से बचाने का आग्रह किया गया है।
- पेड़ों, पहाड़ों, नदियों आदि के कारण पृथ्वी सुंदर और युवा बनी रहती है। यदि ये सब नष्ट होते हैं, तो पृथ्वी बूढ़ी ही लगेगी! इन सबकी रक्षा करके हम पृथ्वी को असमय के बुढ़ापे से बचा सकते हैं, यह हमारा कर्त्तव्य है। ऐसा न करके हम अपने मनुष्य होने की सार्थकता भी सिद्ध नहीं कर पाएँगे।

आइए समझें

- साहित्य में कल्पना का उपयोग किसी-न-किसी सत्य को कहने के लिए किया जाता है। इस कविता में पेड़ों, नदियों, पहाड़, पत्थरों, हवा और पृथ्वी के परेशान और दुखी होने की कल्पना की गई है। यह कल्पना नहीं, हमारे समय की सच्चाई है। हम इन प्राकृतिक संसाधनों को लगातार नष्ट कर रहे हैं और यह नहीं समझ पा रहे हैं कि ऐसा करके खुद को ही नष्ट कर रहे हैं। कवयित्री ने प्राकृतिक संसाधनों के दुख को महसूस किया और स्वयं भी दुखी हुई। साथ ही, वह सभी से इस दुख को महसूस करने के लिए आग्रह करती है।
- प्राय: प्रकृति के सौंदर्य को व्यक्त करने के लिए उसका मानवीकरण किया जाता है। इस कविता में प्रकृति पर आए संकट को व्यक्त करने और उसका अनुभव कराने के लिए मानवीकरण किया गया है।

यह जानना ज़रूरी है

- पेड़, नदी, पहाड़, हवा आदि को मिलाकर पर्यावरण बनता है। 'पर्यावरण' शब्द 'परि' और 'आवरण' से बना है, जिसका अर्थ है–हमारे आस-पास की प्राकृतिक स्थिति। पर्यावरण प्रकृति का अमूल्य उपहार है।
- अपनी संतुलित ज़िंदगी के लिए मनुष्य पेड़-पौधों, जल, वायु, जीव-जंतुओं, पर्वत आदि पर निर्भर है। अधिक से अधिक सुविधाओं के लोभ में वह इनका अंधाधुंध दोहन करता आ रहा है। ऐसा करके वह प्राकृतिक आपदाओं को न्योता देता है।
- ऐसा नहीं है कि सभी लोग प्रकृति का दोहन ही कर रहे हैं। हममें से कुछ लोग ऐसे भी हैं, जो प्रकृति के कष्ट को महसूस करते हैं। वे सही अर्थों में मनुष्य हैं। 'चिपको आंदोलन' का नारा है–

  क्या हैं जंगल के उपकार–मिट्टी, पानी और बयार।

  मिट्टी, पानी और बयार-ज़िंदा रहने के अधि कार।।
- **पेड़ों के लाभ**–ऑक्सीजन के बड़े स्रोत; ज़मीन को उपजाऊ, जल-चक्र के नियमन और भू-जल का स्तर बनाए रखने में सहायक; फूल-फल देते हैं, जैव-विविधता बनाए रखते हैं; छाया, ठंडक देने वाले; धूल, प्रदूषण आदि से बचाने वाले।
- पौधारोपण करके बंजर हुई धरती को फिर से हरा-भरा बनाया जा सकता है। जल-संरक्षण से पानी की कमी भी दूर की जा सकती है। लेकिन, यदि पहाड़ एक बार नष्ट हो जाएँ, तो उन्हें फिर से उत्पन्न नहीं किया जा सकता।
- पहाड़ अनेक प्रकार की विनाशकारी हलचलों से धरती की रक्षा करते हैं, इसलिए उन्हें 'भूधर' कहा जाता है।

महत्त्वपूर्ण व्याकरण-बिंदु

- **विनम्रता में आग्रह और प्रश्न में प्रस्ताव**

  जैसे–क्या तुम शाम को आ सकते हो? अर्थात् तुम शाम को आ जाओ तो अच्छा है। या मेरी

इच्छा है, मैं चाहता हूँ कि शाम को आ जाओ।

पाठ में–क्या तुमने कभी सुनी है...? सुना है कभी...? आदि।

- कभी-कभी हम किसी से ऐसी बात कहना चाहते हैं, जो सुनने वाले को अच्छी न लगे या हम कहना तो नहीं चाहते पर कहना ज़रूरी है या किसी की कमी बताने, उसकी आलोचना करने, नसीहत देने के लिए कहते हैं। **उपर्युक्त को कहने का ढंग–**''क्षमा कीजिएगा। आपकी यह बात ठीक नहीं।'' (बड़े से)

  ''क्षमा करना! तुम यह ठीक नहीं कर रहे।'' (बराबर वाले या छोटे से)

  पाठ में–अगर नहीं, तो क्षमा करना! मुझे तुम्हारी आदमी होने पर संदेह है!!

- पाठ में एक शब्द आया है–'बतियाना'। 'बात' संज्ञा शब्द है। 'बात' से 'बतियाना' बना। संज्ञा को नाम कहते हैं। यहाँ संज्ञा शब्द 'बात' का प्रयोग क्रिया की 'धातु' के रूप में हुआ है, अत: यह 'नामधातु' क्रिया है।

  ऐसे ही अन्य शब्द–धकियाना, लतियाना, हथियाना आदि।

सराहना-बिंदु

- प्रश्न-शैली के माध्यम से कुछ सुझाव व्यक्त करने के कारण कविता प्रभावशाली बनी है।
- **मानवीकरण**

  जैसे–पेड़ों को सपनों में भी आक्रमण करती कुल्हाड़ियाँ दिखती हैं और वे भय से चीत्कार कर उठते हैं; कुल्हाड़ियों के वार से पेड़ की हिलती टहनियों को बचाव के लिए पुकारते हज़ारों-हज़ार हाथ के रूप में देखना; नदियों का एकांत में मुँह ढाँपकर रोना; विस्फोट के कारण मौन समाधि लिए पहाड़ के सीने का दहलना; हथौड़ों की चोट से पत्थरों का चीख़ना; प्रदूषण के कारण हवा द्वारा ख़ून की उल्टियाँ करना–

  इस सबके कारण पृथ्वी का बूढ़ी होकर गुमसुम, दुखी होना।

- प्रश्न-शैली, मानवीकरण, दृश्यात्मक शब्दों और विनम्रता के लहज़े के कारण यह कविता प्रभाव छोड़ने और संवेदनशीलता बढ़ाने में सफल है।
- सभी प्राणियों में मनुष्य विशिष्ट है, उसके पास बुद्धि, विवेक-शक्ति है। संवेदनशील होना मनुष्य का कर्त्तव्य है। ये सब बातें कविता में याद दिलाई गई हैं।
- भावों को व्यक्त करने के लिए कम-से-कम शब्दों का उपयोग।
- भाव विशेष की अभिव्यक्ति करने वाले शब्द–चीत्कार, धमस, दहलना, चीख़, गुमसुम।

योग्यता बढ़ाएँ

- पर्यावरण-संरक्षण के लिए किए गए उपायों की जानकारी प्राप्त कीजिए।
- दूसरे व्यक्ति को संवेदनशील बनाने के लिए 'मानवीकरण' का उपयोग कीजिए।
- सुनने वाले की विनम्रतापूर्वक आलोचना करने के ढंग का कौशल विकसित करने के लिए कविता में आए ऐसे अंशों पर ध्यान दीजिए।

अधिकतम अंक कैसे पाएँ

- पहले एक बार पूरी कविता पढ़कर मूल भाव ग्रहण कीजिए।
- सुनने, देखने, धमस, सोचने, महसूस करने, बतियाने का संबंध किन-किन से या किन स्थितियों से है–इस पर ध्यान दीजिए।
- 'पृथ्वी के दुख' किन्हें कहा गया है–विचार कीजिए।
- 'आदमी' होने के लक्षणों का विवेचन कीजिए।
- अपने देश में पर्यावरण-संरक्षण के लिए किए गए उपायों की खोज कीजिए।

अपना मूल्यांकन करें

1. पाठ के आधार पर मानवीकरण और संवेदनशीलता की संबद्धता पर 20-25 शब्दों में टिप्पणी लिखिए।

2. अपने क्षेत्र में जल-संरक्षण के लिए किए गए किसी एक प्रयास का उल्लेख कीजिए।

3. हरी-भरी प्रकृति को देखकर आपको कैसा लगता है? 20-25 शब्दों में लिखिए।

4. सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(i) निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द शेष सभी से भिन्न प्रकार का है–

(क) धमस ( ) (ख) चीत्कार ( )

(ग) बतियाना ( ) (घ) दहलना ( )

(ii) कविता में आए निम्नलिखित शब्द-युग्मों में से कौन-सा असंगत है–

(क) पेड़–चीत्कार ( ) (ख) पहाड़–चीख़ ( )

(ग) बूढ़ी पृथ्वी–दुख ( ) (घ) नदियाँ–रोना ( )